आभार प्रदर्शन

समाज में गुरु के स्थान को ऊँचा माना गया है क्योंकि गुरु के सानिध्य में सहकर शिष्य ज्ञान प्राप्त करता है। इसी कारण में अपने गुरु एवं शोधक निर्देशक डॉ. (श्रीरत्नी) मात्या बर्मा, को बदव से नमन करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके मार्गदर्शन के अभाव में मैं इस कठिन प्रतीत होने वाले शोधकार्य को पूरा नहीं कर पाता। आपने अध्ययन के दीर्घ में भटकने पर कुशल मानी की तरह से नैया को निष्ठित दिशा प्रदान की, जिसके लिए मैं सदैव श्रान्नी रहूँगा।

मुझे शोध कार्य के लिए प्रेरित करने वाले अपने माता-पिता को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

शोध कार्य की अवधि इतनी लंबी होती है कि परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वाह प्रभावित होता है। इस हेतु परिवार के जिम्मेदारियों में आने वाली परेशानियों को प्रकट न करने के लिए मैं अपनी पत्नी श्रीमती देवकुमारी कष्टप एवं पुत्र चिर. नीलकंठ उपक्रम के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शोधकार्य में प्रशासन की विशेष भूमिका होती है। जहाँ से शोधार्थी द्वारा “शोध शीर्षक” से संबंधित साहित्य/सूचनाओं को प्राप्त किया जाता है। इसी कारण में हमारी हेतु, प्र. सुधरकाल शर्मा प्रायांगार, प्र. रविशंकर शुक्ल विज्ञानविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) के प्रथमात्म डॉ. भुरुण सेनगुप्ता का जिन्होंने न केवल साहित्यों/सूचनाओं को प्रदान करने में सहयोग दिया बल्कि शोध के दीर्घ आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु अपना वहुभूमित्व समय एवं मार्गदर्शन दिया।

शोध कार्य के दीर्घ हमेशा मेरा उत्साहवर्धन करने वाले विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. हरीश कुमार साहू एवं महाविद्यालयीन प्रथमात्म डॉ. सुनीता कुमार सोनी का भी आभार हूँ।

न्यायप्रदेश एवं चतुरागाह के उन समस्त विज्ञानविद्यालयीन प्रथमात्मों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने अपने व्यस्त कार्य अवधि में से वहुभूमित्व समय और कालों को संकलित करने में दिया।

अंत में मैं उन सभी मेरे हितीयों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध कार्य को पूरा करने में सहयोग प्रदान किया।

संतृ राम कष्टप